

**प्र.1** गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

CBSE 2014, 12, 10

**उत्तर** गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि तुम तो बहुत दुर्भाग्यशाली हो, जो श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी अभी तक उनसे प्रेम नहीं कर सके। नहीं तो उनका रूप ही ऐसा है कि कठोर हृदय वाले व्यक्ति के मन में भी उनके प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाए। तुमने कभी प्रेम को जाना ही नहीं, इसलिए कृष्ण के प्रेम के धागे से दूर रहे हो।

**प्र.2** उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

CBSE 2012, 11

**उत्तर** गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित दो तत्त्वों से की है

- एक पानी के अंदर रहने वाले कमल के उस पत्ते से, जो पानी के अंदर रहते हुए भी पानी से अछूता रहता है।
- दूसरा जल में रखी हुई तेल की मटकी से की है जिस पर जल की एक बूँद भी ठहर नहीं पाती अर्थात् उस पर जल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

**प्र.3** गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

दक्षता आधारित प्रश्न

अथवा

‘सूरदास’ के पद के आधार पर लिखिए कि गोपियों ने किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? CBSE 2019, 10

**उत्तर** गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं

- जिस प्रकार पानी के अंदर रहने वाला कमल का पत्ता पानी एवं कीचड़ से अछूता रहता है, उसी प्रकार तुम श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम से अछूते हो।
- वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे। वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे, किंतु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

**प्र.4** उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया?

CBSE 2013, 12, 11, 10

**उत्तर** गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम और विरह में पहले से ही व्याकुल हो रही थीं। उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण मथुरा से शीघ्र ही वापस लौट आएँगे, किंतु जब श्रीकृष्ण ने उनके लिए उद्धव के माध्यम से योग का संदेश भेजा तो इसने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया, क्योंकि वे तो श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहती थीं।

**प्र.5** ‘मरजादा न लही’ के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

CBSE 2016

**उत्तर** कृष्ण ने गोपियों के प्रेम के महत्व को ठीक से नहीं समझा, इसी का परिणाम था कि उन्होंने गोपियों को प्रेम का संदेश भिजवाने की अपेक्षा उद्धव से योग का संदेश भिजवाया। यह गोपियों के प्रेम का अपमान था। गोपियों के प्रेम का तिरस्कार करके कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा को तोड़ा।

**प्र.6** कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

दक्षता आधारित प्रश्न

**उत्तर** कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए गोपियों ने कहा है कि

- वे श्रीकृष्ण के प्रेम में उसी तरह बँधी हुई हैं, जैसे चींटियाँ गुड़ से चिपकी रहती हैं।
- उनके लिए श्रीकृष्ण तो हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं, जिन्हें उन्होंने मन, कर्म और वचन से अपने हृदय में बसाया हुआ है।
- वे जो जागते-सोते, सपने में और दिन-रात कान्हा-कान्हा रटती रहती हैं।

**प्र.7** गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

CBSE 2012, 11, 10

**उत्तर** गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है, जिनका मन चकरी के समान चंचल है। उनका मन तो सदैव श्रीकृष्ण के प्रेम में ही रमा रहता है, इसलिए उन्हें योग की आवश्यकता नहीं है। यहाँ पर श्रीकृष्ण पर ही चंचल होने संबंधी व्यंग्य किया गया है, क्योंकि वे मथुरा जाकर उन्हें भूल गए थे।

**प्र.8** प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।

CBSE 2012, 11

**उत्तर** यहाँ गोपियों का योग-साधना के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। उन्हें श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम था। उनके अनुसार, योग-साधना का महत्व तो उनके लिए होता है, जो जीवन से प्यार करते हैं। वे तो केवल श्रीकृष्ण से प्यार करती हैं। अतः वे योग को तुच्छ वस्तु समझती हैं। इसीलिए वे कहती हैं योग का संदेश उन्हें सौप दो जिनके मन चंचल है।

**प्र.9** गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

CBSE 2012, 11

अथवा गोपियाँ श्रीकृष्ण को राजा का क्या कर्तव्य याद दिलाती हैं?

CBSE Diksha

**उत्तर** गोपियों के अनुसार, राजा का परम धर्म यह है कि वह अन्याय का विरोध करे और अपनी प्रजा को हर प्रकार के अन्याय से दूर रखे। जो राजा अपनी प्रजा पर अन्याय करता है या उसे अन्याय से नहीं बचाता, उसे राजा होने का कोई अधिकार नहीं है। उसे अपनी प्रजा को नहीं सताना चाहिए।



**प्र.10** गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं?

CBSE 2012, 11, 10

**उत्तर** श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गए योग के संदेश को सुनकर गोपियों को लगने लगा है कि वे उन्हें भूल गए हैं। वे पहले तो प्रत्येक व्यक्ति को अन्याय से बचाते थे, अब वे उन पर ही अन्याय कर रहे हैं। वे तो पहले ही बहुत चतुर थे। अब तो उन्होंने राजनीति को भी पढ़ लिया है, जिससे उनकी बुद्धि बहुत बढ़ गई है। इन परिवर्तनों के कारण गोपियाँ अपना मन वापस लेने के लिए कहती हैं।

**प्र.11** गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

**उत्तर** गोपियों के वाक्चातुर्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं

- गोपियाँ व्यंग्य के माध्यम से उद्धव से कहती हैं कि तुम तो बहुत भाग्यवान हो जो श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम में नहीं डूब सके।
- गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबी हैं, इसलिए उनकी ज्ञान की बातों को वे नहीं समझ पाती हैं। उनके लिए तो योग कड़वी ककड़ी के समान है।

इस प्रकार, गोपियाँ अपने तीखे व्यंग्य द्वारा निर्गुण ब्रह्म व उद्धव के ज्ञान व योग का उपहास उड़ाती हैं।

**प्र.12** संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के 'भ्रमरगीत' की विशेषताएँ बताइए।

**अथवा** पठित पदों के आधार पर सूरदास के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

CBSE Diksha

**उत्तर** सूरदास मधुर तथा कोमल भावनाओं का मार्मिक चित्रण करने वाले महाकवि हैं। सूर के 'भ्रमरगीत' में अनुभूति और शिल्प दोनों का ही संयोग हुआ है। इसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं

- श्रीकृष्ण के प्रेम की उदात्तता को प्रकट किया गया है, जिससे अछूता रहना कठिन है।
- श्रीकृष्ण की भक्ति को सांसारिक भवबाधा से मुक्ति का मार्ग बताया है।
- श्रीकृष्ण की आराधना के माध्यम से सगुण एवं निर्गुण का भेद प्रकट करते हुए सगुण भक्ति को निर्गुण भक्ति से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास किया है।
- श्रीकृष्ण के माध्यम से जनता का शोषण करने वाले शासकों पर कटाक्ष किया है।
- 'भ्रमरगीत' एक भाव-प्रधान गीतिकाव्य है।

(vi) 'भ्रमरगीत' का कला-पक्ष अत्यंत सशक्त, प्रभावशाली और रमणीय है।

(vii) शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(viii) अनुप्रास, उपमा, दृष्टांत, रूपक, अतिशयोक्ति अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(ix) 'भ्रमरगीत' की रचना 'पद' छंद में हुई है। इसके पद स्वयं में स्वतंत्र भी हैं और परस्पर संबंधित भी हैं।

(x) सूरदास कवि होने के साथ-साथ सुप्रसिद्ध गायक भी थे। यही कारण है कि 'भ्रमरगीत' में भी संगीतात्मकता का गुण सहज ही दृष्टिगत होता है।

## रचना और अभिव्यक्ति

**प्र.13** गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

दक्षता आधारित प्रश्न

**उत्तर** गोपियाँ उद्धव के सामने श्रीकृष्ण के प्रेम को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित अन्य तर्क दे सकती थीं

- यदि श्रीकृष्ण के लिए योग इतना महत्वपूर्ण था, तो उन्होंने हमसे प्रेम क्यों किया?
- जब हम श्रीकृष्ण से प्रेम करती हैं, तो निर्गुण ब्रह्म का ध्यान कैसे कर सकती हैं?

**प्र.14** उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी, जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

**उत्तर** उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे। इसके विपरीत गोपियाँ सीधी-सादी, भोली-भाली थीं। उन्हें दुनिया की बातों से अधिक मतलब नहीं था। वे तो केवल श्रीकृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। यही वह शक्ति थी, जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी और जिसने ज्ञानी उद्धव को भी परास्त कर दिया।

**प्र.15** गोपियों ने यह क्यों कहा कि "हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं?" क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है? स्पष्ट कीजिए।

दक्षता आधारित प्रश्न

**उत्तर** जब श्रीकृष्ण ने उद्धव के द्वारा गोपियों के लिए उनके प्रेम के बदले योग का संदेश भेजा, तो गोपियों को लगा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं। गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में स्पष्ट रूप से नजर आता है। आज की राजनीति में नेता जनता को उनकी मुख्य माँगों से भटकाकर किसी और मुद्दे में लगाने का प्रयास करते हैं। नेता भोली-भाली जनता को धर्म तथा जाति के नाम पर मूर्ख बनाने का कार्य कर रहे हैं। वे भारतीय जनता का भावनात्मक शोषण करते हैं।